बरेली, सोमवार
14 दिसंबर, 2020
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00
पृष्ठ 16

दैनिक जागरण

PAGE NO, 01BOTTOM

दिमाग पर 'चोट' कर रहा मोबाइल रेडिएशन

पुलक त्रिपाठी • लखनऊ

मोबाइल रेडिएशन से मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव हमेशा ही बहस का विषय रहा है। इस मसले पर अभी तक वैज्ञानिक पूरी तरह एकमत नहीं हैं। अलग-अलग भ्रांतियां भी सामने आती रही हैं, मगर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) में विज्ञानियों का हालिया शोध मोबाइल उत्सर्जित इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन (ईएमएफ) से इंसानों के दिमाग पर गहरी 'चोट' के संकेत दे रहा है।

नए सिरे से यह शोध उसी ड्रोसोफिला (मक्खी की तरह दिखने वाले कीट) पर हुआ है, जिसे पहले भी प्रयोग किया जाता रहा है। इस दौरान ड्रोसोफिला को लगातार 21 दिन तक 4जी मोबाइल नेटवर्क क्षेत्र में रखा गया तो उसके दिमाग में व्यापक परिवर्तन नजर आए। उसके सेल्स परिवर्तित हो गए। इतना ही नहीं, दिमागी सेल्स की संरचना में भी काफी डरावने बदलाव दिखे। शोधकर्ताओं का दावा है कि ड्रोसोफिला की तरह मोबाइल रेडिएशन से इंसानों में गंभीर न्यूरोलॉजिकल बदलाव को नकार नहीं सकते।

ऐसे किया गया शोध : क्यू वन श्रेणी की हालिया प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एलसीवियर में 'बायोमेडिकल सिग्नल प्रोसेसिंग एंड कंट्रोल' नाम से किया यह शोध प्रकाशित हुआ है। वैज्ञानिकों ने मोबाइल रेडिएशन का प्रभाव जानने के लिए करीब एक हजार ड्रोसोफिला को चुना। इनमें 500 ड्रोसोफिला को 21 दिन तक रोजाना आठ घंटे मोबाइल रेडिएशन से गुजारा गया। वहीं, 500 ड्रोसोफिला को सामान्य वातावरण (मोबाइल रेडिएशन रहित क्षेत्र) में रखा गया। 21 दिन के बाद सामने आया कि मोबाइल नेटवर्क में रहने वाली ड्रोसोफिला के सेल्स में व्यापक परिवर्तन हुआ। साथ ही अन्य हानिकारक बदलाव भी देखे गए। शोधकर्ताओं के अनुसार वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (डब्ल्यूएचओ) मोबाइल रेडिएशन से होने वाले खतरे को लेकर पहले भी अगाह कर चुका है। लॉकडाउन और कोरोना काल में मोबाइल फोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है, जो चिंतनीय है।

सावधान

- एकेटीयू में ड्रोसोफिला पर हुए शोध में आए चौंकाने वाले नतीजे
- ईएमएफ से मिले इंसानों के दिमाग को क्षति पहुंचने के संकेत

इंसानी शरीर पर होने वाले प्रभाव जानने के लिए ड्रोसोफिला को स्पेसिमेन के तौर पर लेकर तमाम शोध हो चुके है। यह बात साबित हो चुकी है कि वातावरण मे बदलाव से जैसा प्रभाव इंसानी शरीर पर पड़ता है, वैसा ही ड्रोसोफिला पर भी। बायोमेडिकल सिग्नल प्रोसेसिंग एंड कंट्रोल शोध में इसीलिए इनका प्रयोग किया गया। नतीजों से साफ है कि मोबाइल रेडिएशन/रेडियो फ्रीक्वेंसी/4जी रेंज से इंसान में न्यूरोलॉजिकल बदलाव से इन्कार नहीं कर सकते।

प्रोफेसर एमके दत्ता, डीन रिसर्च, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय